

(मुख्य एवं अतिरिक्त कैलेंडर), रसीद (परिचयों का व्यौरा), गन्ना तौल (अंतिम तौल तिथि एवं वजन, कुल गन्ना आपूर्ति), भुगतान (कुल भुगतान राशि एवं बैंक की जानकारी जिसमें भुगतान गया) इत्यादि।

- 4. मोबाइल नंबर बदलना:** किसान भाई इस विकल्प में जाकर बिना किसी कार्यालय एवं बिना किसी प्रार्थना पत्र के वे अपने घर अथवा खेत कहीं भी एवं कभी भी वो अपना मोबाइल नंबर बदल सकते हैं।
- 5. अन्य विकल्प:** अन्य विकल्पों में किसान को बदलना, रिफ्रेश करना, पिछले वर्ष के आंकड़े देखना, मोबाइल नंबर बदलना, तकनीकी सहायता हेतु संपर्क करना, प्रतिक्रिया देना, एवं ई गन्ना ऐप के बारे में जानकारी लेना इत्यादि।

परिणामस्वरूप समस्त गन्ना किसान, गन्ना विभाग के पुराने नियम एवं कानूनों की तुलना में अब बहुत ही संतुष्ट हैं। अब उन्हें किसी भी दफ्तर (कार्यालयों) के चक्कर नहीं लगाने पड़ते एवं निर्गत परिचयों को प्राप्त करने के लिए उनको किसी से पूछना नहीं पड़ता। अतः यह ई गन्ना ऐप गन्ना किसानों के लिए सारथी का काम करता है।

— **अमित कुमार सिंह**

(विषय वस्तु विशेषज्ञ—कृषि प्रसार)

कृषि विज्ञान केन्द्र, चन्दौली, अचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश

ड्रैगन फ्रूट की खेती एवं उससे होने वाले फायदे

ड्रैगन फ्रूट का वैज्ञानिक नाम हिलोकेरेस अंडटस है। यह दक्षिण अमेरिका में पाया जाता है। यह एक किस्म की बेल पर लगने वाला फल है, जो कैवटेसिया फैमिली से संबंधित है। इसके तने गूदेदार और रसीले होते हैं। इस फल में खास बात यह है कि इसके फूल बहुत ही सुगंधित होते हैं, जो रात में ही खिलते हैं और सुबह होने तक झड़ जाते हैं। ड्रैगन फ्रूट एक ऐसा फल है जिसमें भरपूर पोषक तत्व पाए जाते हैं। इसे खाने से इम्युनिटी मजबूत होती है साथ ही कई बिमारियों से लड़ने में भी मदद मिलती है। इसलिए इसे पोषक तत्व का पावर हाउस भी कहा जाता है। ड्रैगन फ्रूट में एंटी-ऑक्सिडेंट्स, विटामिन-सी और भरपूर मात्रा में फाइबर पाया जाता है। डायबिटीज, हार्ट और कैंसर जैसी बिमारियों से लड़ने में ये फल आपकी काफी मदद करता है। ड्रैगन फ्रूट में लायकोपीन और बीटा कैरोटीन होता है जिससे कैंसर और हार्ट जैसी बिमारियों का खतरा कम होता है। इस फ्रूट की खास बात ये है कि कोरोना काल में (ड्रैगन फ्रूट) आपकी इम्युनिटी को मजबूत बनाता है। इसमें भरपूर आयरन होता है और पाचन भी ठीक रखता है।

तापमान और मानसून

ड्रैगन फ्रूट के लिए ज्यादा बारिश की जरूरत नहीं होती है। वहीं अगर मिट्टी की गुणवत्ता भी ज्यादा अच्छी नहीं हो तो भी यह फल अच्छी तरह से उग जाता है। एक साल में 50 सेंटीमीटर की बारिश और 20 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान होना चाहिए। इसकी खेती के लिए ज्यादा धूप की भी आवश्यकता नहीं होती है। ऐसे में यह जरूरी है कि आप शेड का इस्तेमाल जरूर करें जिससे फल की खेती अच्छी तरह से हो सके।

ड्रैगन फ्रूट के लिए मिट्टी कैसी हो ?

अगर आप अपने खेत में ड्रैगन फ्रूट की खेती करने की सोच रहें हैं तो आपकी मिट्टी 5.5 से 7 पी.एच. अच्छे कार्बनिक पदार्थ रेतीली मिट्टी इसकी खेती के लिए सबसे अच्छी होती है। यूँ तो ड्रैगन फ्रूट की खेती आप किसी भी इलाके में कर सकते हैं लेकिन सबसे ज्यादा खेती गुजरात के कुछ इलाकों और राजस्थान में होती है। वहीं तमिलनाडू, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक जैसे राज्यों में भी बड़ी संख्या में किसान ड्रैगन फ्रूटस की खेती करते हैं।

एक हैक्टेयर में कितने पौधे लगते हैं ?

ड्रैगन फ्रूट एक सीजन में कम से कम तीन बार फल देता ही है। एक फल का वजन आमतौर पर 400 ग्राम तक होता है। एक पौधे को लगाने के बाद पहले साल से ही आपको ड्रैगन फ्रूट का फल मिलने लगेगा। मई जून महीने में इसमें फूल आते हैं और फिर दिसम्बर महीने में फल लगने शुरू हो जाते हैं। आमतौर पर दो ड्रैगन फ्रूटस के बीच की दूरी दो मीटर होनी चाहिए। एक हैक्टेयर जमीन पर तकरीबन पौधे आसानी से लगाए जा सकते हैं। शुरूआती समय में आप इन पौधों को किसी लकड़ी या फिर लोहे की छड़ी की मदद से बढ़ने से सहारा दे सकते हैं। पौधों को 50 सेंमी0 × 50 सेंमी0 × 50 सेंमी0 के गड्ढों में ही लगाएं, जिससे वह अच्छी तरह से बड़ा हो सके।

ड्रैगन फ्रूट की किस्में

मध्य अमेरिका और मैक्सिको के मूल निवासी ड्रैगन फ्रूट में बीज के साथ एक मीठा गूदा होता है। इसमें कीवी और नाशपाती के मिश्रण के समान एक कुरकरे बनावट है। यहां सबसे अच्छे प्रकार के ड्रैगन फ्रूट हैं जिन्हें आप और हम भारत में भी उगा सकते हैं।

- हिलोसेरियस अंडटस इसे पिटाया ब्लैंका, सफेद मांसल पिटाया के रूप में भी जाना जाता है। इस ड्रैगन फ्रूट किस्म में गुलाबी त्वचा, काले बीज और सफेद गूदा होता है।
- हायलोसेरस पॉलीरिजस इसे लाल पिथया के नाम से भी जाना जाता है यह किस्म मैक्सिको की मूल निवासी है, लेकिन इसकी खेती अब कई देशों में की जाती है।

- हायलोसेरस कोस्टारिसेंसिस को पिताया रोजा के नाम से भी जानते हैं। इसमें नाशपाती के आकार के काले बीजों के साथ बैंगनी-लाल गूदा होता है।
- हायलोसेरस सेलेनिसेरेस – इसे अमरिला भी कहते हैं। यह किस्म अमेरिका की मूल निवासी है और अन्य प्रकारों के विपरीत है, इसमें पीला त्वचा के सफेद रंग का गूदा होता है।

ड्रैगन फ्रूट रंगों के अनुसार

- लाल ड्रैगन फ्रूट:** इसमें गुलाबी त्वचा होती है जिसके अन्दर गहरे लाल रंग का गूदा होता है। इस प्रकार के अन्तर्गत आने वाले फलों की किस्में कोस्टा रिकान, रेड जैना, जमोरानों और नेचुरल मिस्टिक है।
- गुलाबी ड्रैगन फ्रूट:** इसमें गुलाबी – लाल गूदा होता है। डिलाइट, डार्क स्टार, पर्पल हेज, मकिसुपा और अमेरिकन ब्युटी जैसी किस्में आती हैं।
- सफेद ड्रैगन फ्रूट:** यह किस्म गुलाबी त्वचा और सफेद गूदा का उत्पादन करती हैं। डेविड बॉवी, एलए महिला, एलिस और नेट्जेल लोकप्रिय किस्में हैं।
- खट्टा ड्रैगन फ्रूट:** यह ड्रैगन फ्रूट खट्टा और कम मीठा होता है। यह अन्य ड्रैगन फलों की तुलना में अधिक रस भी पैदा करता है।
- पीला ड्रैगन फ्रूट:** इस प्रकार में केवल एक किस्म शामिल है जिसमें पीली त्वचा के साथ सफेद और दृढ़ गूदा होता है जो बहुत स्वादिष्ट होने के साथ – साथ मीठा भी होता है।

ड्रैगन फ्रूट से लाखों में होगी कमाई

अगर तय मानकों के अनुसार, ड्रैगन फ्रूट की खेती की जाए तो बंपर कमाई की जा सकती है। कई लोग अपनी अच्छी खासी नौकरी छोड़कर ड्रैगन फ्रूट की खेती करके कमाई कर रहे हैं। एक एकड़ के खेत में हर साल 8 से 10 लाख रुपये तक की कमाई की जा सकती है। हलांकि इसके लिए शुरूआती समय में चार-पांच लाख रुपये तक खर्च करने पड़ सकते हैं। इस खेती में पानी की जरूरत ज्यादा नहीं होने की वजह से किसानों को पानी पर ज्यादा खर्च करने पड़ सकते हैं जिससे उन्हें काफी अच्छा मुनाफा होता है।

ड्रैगन फ्रूट के फायदे

ड्रैगन फ्रूट बेनिफिट्स किसी भी बिमारी को जड़ से खत्म तो नहीं करते, लेकिन विभिन्न लक्षणों को कम करके आराम जरूर दिला सकते हैं।

- डायबिटीज में ड्रैगन फ्रूट के फायदे:** ड्रैगन फ्रूट में प्राकृतिक एंटीऑक्सीडेंट प्रभाव के साथ-साथ पलेवोडोइड,

फेनोलिक एसिड, एस्कॉर्बिक एसिड और फाइबर होता है। ये सभी तत्व ब्लड में शुगर की मात्रा को नियंत्रित करते में मदद कर सकते हैं। वहीं, जिन लोगों को डायबिटीज नहीं है, उनके लिए ड्रैगन फ्रूट का सेवन डायबिटीज से बचने का अच्छा तरीका हो सकता है।

- हृदय के लिए ड्रैगन फ्रूट बेनिफिट्स:** डायबिटीज दुनिया के सबसे खतरनाक रोगों में से एक है। कुछ मामलों में यह हृदय रोग का कारण भी बन सकती है। डायबिटीज के कारण हृदय रोग होने के पीछे शरीर में ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस का बढ़ता प्रभाव भी एक वजह होता है। ऐसे में एंटीऑक्सीडेंट गुणों से भरपूर फल और सब्जियां खाने की सलाह दी जाती है और ऐसे ही फलों में ड्रैगन फ्रूट का नाम भी शामिल है। ड्रैगन फ्रूट बीटालायंस, पॉलीफेनोल्स और एस्कॉर्बिक एसिड जैसे प्रभावी एंटीऑक्सीडेंट से युक्त होता है, जिस कारण यह ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस का प्रभाव कम करके हृदय को सुरक्षित रखने में मदद करता है। इसके अलावा ड्रैगन फ्रूट में पाये जाने वाले छोटे-छोटे काले बीज ओमेगा-3 और ओमेगा-9 फैटी एसिड के अच्छे स्रोत हैं, जो हृदय को स्वस्थ रखने में सहायक हो सकते हैं।
- कैंसर में बेनिफिट्स ऑफ ड्रैगन फ्रूट:** शोधकर्ताओं के मुताबिक, ड्रैगन फ्रूट के फायदे कैंसर में आराम पाने में देखे गए हैं। इसमें एंटीट्यूमर, एंटीऑक्सीडेंट और एंटी इंप्लेमेटरी गुण देखे गए हैं। साथ ही इस पर किए प्रयोग में भी पाया गया कि ड्रैगन फ्रूट में पाए जाने वाले ये खास गुण महिलाओं को ब्रेस्ट कैंसर से बचाने में मदद कर सकते हैं और ड्रैगन फ्रूट का उपयोग इसका उपचार नहीं है। इस समस्या के लिए डॉक्टर से परामर्श करके सही ट्रीटमेंट लेना जरूरी है।
- कोलेस्ट्रॉल करे नियंत्रित:** ड्रैगन फ्रूट खाने के फायदे में कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित रखना भी शामिल है। बढ़ा हुआ कोलेस्ट्रॉल शरीर में कई गंभीर बीमारियों की वजह बन सकता है, जिसमें दिल का दौरा और स्ट्रोक भी शामिल है। इसके लिए ड्रैगन फ्रूट का उपयोग करना फायदेमंद हो सकता है।
- पेट संबंधी समस्याओं में लाभदायक:** ड्रैगन फ्रूट बेनिफिट्स पेट संबंधित समस्याओं से आराम पाने में भी मिल सकते हैं। दरअसल, इसमें मौजूद ओलिगोसैराइड (एक तरह का केमिकल कंपाउंड) में प्रीबायोटिक गुण पाए जाते हैं, जो आंत में हेल्दी बैक्टीरिया को बढ़ाते हैं। इससे पाचन तंत्र को स्वस्थ रखने में मदद मिल सकती है। से पेट और आंत के अच्छे माइक्रोबायोम को बढ़ावा देते हैं। इससे पेट और आंत से जुड़े विकारों को दूर रखने में और पेट व आंत को स्वस्थ

बनाए रखने में मदद मिल सकती है। इसके साथ ही ड्रैगन फ्रूटस फाइबर और कई विटामिन से युक्त होता है, जो पाचन तंत्र को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है।

6. **गठिया में ड्रैगन फ्रूट के उपयोग:** गठिया या अर्थराइटिस ऐसी शारीरिक समस्या है, जो जोड़ों को प्रभावित करती है। इसमें जोड़ों में दर्द होता है, सूजन आती है और इन्हें हिलाने में समस्या होती है। यह कई कारणों से हो सकता है और इनमें एक कारण शरीर में ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस का बढ़ जाना भी है, जिसे कम करने के लिए एक अच्छे एंटीऑक्सीडेंट का उपयोग करने की सलाह दी जाती है। बताया जाता है कि ड्रैगन फ्रूट एंटीऑक्सीडेंट से समृद्ध होता है और गठिया से आराम दिलाने में मदद कर सकता है।
7. **इम्यूनिटी के लिए ड्रैगन फ्रूट के फायदे:** इम्यूनिटी को रोग प्रतिरोधक क्षमता भी कहा जाता है। यह हमें कई रोगों से बचाने में मदद कर सकती है। इम्यूनिटी सिस्टम शरीर के कुछ खास अंग, सेल और केमिकल से मिलकर बनी होती है और संक्रमण को बढ़ाने में भी ड्रैगन फ्रूट खाने के फायदे देखे गए हैं। माना जाता है कि ड्रैगन फ्रूट में मौजूद विटामिन-सी रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाता है। इससे शरीर को कई तरह की बीमारियों से बचाया जा सकता है।
8. **डेंगू में लाभकारी:** ड्रैगन फ्रूट का उपयोग डेंगू का उपचार करने में सहायक साबित हो सकता है। इसके लिए ड्रैगन फ्रूट के बीज का उपयोग किया जा सकता है। इन बीजों के फाइटोकेमिकल में एंटीऑक्सीडेंट और एंटीवायरल गुण पाए जाते हैं, जो डेंगू के लक्षणों को कम करने में मदद कर सकते हैं। साथ ही, इसमें मौजूद विटामिन-सी शरीर में प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है, जिससे बीमारियों से लड़ने में मदद मिलती है। फिलहाल, इस संबंध में और वैज्ञानिक शोध किया जा रहा है कि ड्रैगन फ्रूट कैसे डेंगू में फायदा कर सकता है।
9. **हड्डियों और दांत के लिए लाभदायक:** ड्रैगन फ्रूट खाने के फायदे हड्डियों और दांतों को मजबूती प्रदान करने में सहायक साबित हो सकते हैं। इसकी मुख्य वजह है, इसमें पाई जाने वाली कैल्सियम और फॉस्फोरस की मात्रा। कैल्सियम और फॉस्फोरस का अच्छा स्रोत होने के कारण इसका इस्तेमाल हड्डियों और दांतों के लिए लाभकारी साबित हो सकता है। वहीं ड्रैगन फ्रूट में मौजूद मैग्नीशियम भी हड्डियों और दांत के लिए लाभदायक होता है।
10. **शारीरिक कोषिकाओं की मरम्मत:** ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस शरीर को कई तरीकों से नुकसान पहुंचाता है। यहां तक कि यह शरीर की स्वस्थ कोशिकाओं को भी नुकसान पहुंचा सकता है। इसमें मौजूद गैलिक एसिड एक प्रभावी

एंटीऑक्सीडेंट है, जिसमें एंटी-एपोप्टोटिक प्रभाव पाया जाता है। यह कोशिकाओं को ऑक्सीडेटिव क्षति से बचाने में मदद कर सकता है। साथ ही स्वस्थ कोशिकाओं को नुकसान पहुंचाए बिना कैंसर सेल को कम करने में भी सहायक हो सकता है।

11. **अस्थमा में ड्रैगन फ्रूट के फायदे:** अस्थमा एक क्रोनिक (लंबे समय तक चलने वाली) बीमारी है, जिसमें सांस लेने में तकलीफ होती है। इसके साथ सीने में दबाव व खांसी आदि समस्या हो सकती है। ऐसा विभिन्न कारणों से हो सकता है, जिसमें एलर्जी, किसी दवा के प्रभाव ए आनुवंशिकता आदि शामिल हैं। इससे आराम पाने में ड्रैगन फ्रूट का उपयोग किया जा सकता है। एक शोध में यह बताया गया है कि ड्रैगन फ्रूट का नियमित उपयोग अस्थमा और उसके कारण जैसे खांसी से आराम पाने में मदद कर सकता है। इसकी कार्यप्रणाली पर अभी वैज्ञानिक और शोध कर रहे हैं।
12. **गर्भावस्था में लाभदायक:** लोगों के मन में यह सवाल आता होगा कि ड्रैगन फ्रूट प्रेगनेंसी में खाना चाहिए या नहीं, तो हम बता दें कि गर्भवती महिला के लिए भी ड्रैगन फ्रूट खाने के फायदे देखे गए हैं। गर्भावस्था के दौरान महिला के शरीर में एनीमिया के कारण खून की कमी होना आम समस्या है। ऐसा शरीर में आयरन की कमी से हो जाती है, जो पूरे शरीर में ऑक्सीजन पहुंचाने का काम करते हैं। गर्भावस्था में एनीमिया कई गंभीर समस्याओं जैसे गर्भपात, जन्म के समय शिशु की मृत्यु, समय से पहले प्रसव और अन्य समस्याओं का कारण बन सकता है। वहीं ड्रैगन फ्रूट में आयरन की मात्रा पाई जाती है, जो गर्भवती महिलाओं में एनीमिया की समस्या को कम करने में मदद कर सकता है। ड्रैगन फ्रूट का उपयोग सामान्य समय में भी आयरन की कमी को पूरा करने और एनीमिया से राहत पाने के लिए किया जा सकता है।
13. **भूख बढ़ाने में ड्रैगन फ्रूट के फायदे:** ड्रैगन फ्रूट बेनिफिट्स में भूख बढ़ाना भी शामिल है। लेख में पहले ही बताया जा चुका है कि ड्रैगन फ्रूट में पाए जाने वाले फाइबर और विटामिन पेट संबंधी विकारों जैसे – पाचन क्रिया जैसी समस्याओं को दूर करने में कारगर सिद्ध होते हैं। वहीं इसमें पाया जाने वाला विटामिन-बी 2 शरीर में मल्टीविटामिन की तरह काम करता है, जो भूख की कमी को ठीक करने में सक्षम साबित हो सकता है।
14. **बालों के लिए ड्रैगन फ्रूट फायदे:** ड्रैगन फ्रूट के फायदे न सिर्फ स्वास्थ्य और त्वचा के लिए, बल्कि बालों के लिए भी देखे जा सकते हैं। एक शोध में इस बात का जिक्र किया गया है कि ड्रैगन फ्रूट कई पोषक तत्वों से समृद्ध हैं, जिनमें फैटी एसिड भी शामिल

है। ये फ़ैटी एसिड बालों से जुड़ी समस्या जैसे रूसी को कम करने में सहायक को सकता है।

उपयोग: ड्रैगन फ्रूट का इस्तेमाल जैम, जैली, आइसक्रीम, जूस, वाइन आदि में किया जाता है। साथ ही इसे फेस पैक में भी प्रयोग करते हैं।

— **अर्चना देवी, प्रीती कुमारी एवं विजय कुमार विमल**
कृषि विज्ञान केन्द्र, कोटवा, आजमगढ़
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
कुमारगंज, अयोध्या-224229, उ०प्र०

फसल अवशेष प्रबन्धन : वर्तमान कृषि की विशेष आवश्यकता

फसलों की कटाई के बाद प्रक्षेत्रों में बचे हुए फसलों की डंठल, पुआल, भूसा, तना पत्तियों आदि को फसल अवशेष कहा जाता है। भारत एक कृषि प्रधान देश है। देश के 154 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में फसल उत्पादन किया जा रहा है। देश में धान का 115.60, गेहूँ 99.12, मक्का 27.10, बाजरा 9.30, गन्ना 380.83, रेशा युक्त फसलें 41.16, दलहन 24.02 एवं तिलहनी फसलों का 31.50 मिलियन टन उत्पादन हो रहा है, इसलिये इनके द्वारा बहुत बड़ी मात्रा में फसल अवशेष प्रक्षेत्रों एवं खलिहानों में तैयार हो रहे हैं। एक अनुमान के अनुसार प्रति वर्ष 500-600 मिलियन टन फसल अवशेष तैयार होता है। यह फसल अवशेष पशु चारा, पलवार (मल्व), खाद बनाने, घरों की झोपड़ियाँ बनाने, ईंधन एवं कारखानों आदि में प्रयोग किया जाता है। अतः यह फसल अवशेष कृषि जगत के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है। किन्तु हमारे देश में फसलों के अवशेषों का उचित प्रबन्ध करने की वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग नहीं किया जा रहा है।

फसल अवशेष मृदा सूक्ष्म जीवों के लिये जीवांश कार्बन एवं पोषक तत्वों का मुख्य स्रोत है। पौधों के विभिन्न भागों (जड़, तना, फूल, फल, दाना आदि) के बढ़ने हेतु पोषक तत्व जड़ों एवं पत्तियों द्वारा मृदा एवं वायुमंडल से ग्रहण करते हैं। फसल अवशेष में भी उक्त पोषक तत्व विद्यमान रहते हैं। यदि इन फसल अवशेषों का समावेश मृदा में किया जाय, तो पोषक तत्व स्वतः मृदा को उपलब्ध हो जायेंगे। फसल की कटाई के बाद खेत में बचे अवशेष घास-फूस, पत्तियाँ व ढूँठ आदि को सड़ाने के लिये फसल को काटने के पश्चात् 20-25 किग्रा नत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग कर कल्टीवेटर या रोटावेटर की सहायता से मृदा में मिला देना चाहिये। इस प्रकार अवशेष खेत में विघटित होना प्रारम्भ कर देंगे तथा लगभग एक माह में स्वयं सड़कर आगे बोई जाने वाली फसल को पोषक तत्व प्रदान करेंगे। कटाई के पश्चात् नत्रजन का प्रयोग फसल अवशेषों में सड़न की क्रिया को तेज कर देती

है। अतः फसल अवशेषों का प्रबन्ध करना अत्यन्त आवश्यक है, तभी मृदा में जीवांश पदार्थ की मात्रा में वृद्धि कर प्रक्षेत्र को खेती योग्य सुरक्षित रखा जा सकता है।

फसल अवशेष एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है, इनको पुनःचक्रण कर सही ढंग से खेती में उपयोग करके पोषक तत्वों के एक बड़े अंश की पूर्ति की जा सकती हैं। फसल अवशेष प्रबन्ध एकीकृत पोषक तत्व प्रबन्ध का एक मुख्य घटक है, इससे फसल अवशेषों में विद्यमान पोषक तत्व व कार्बनिक पदार्थ आगामी फसलों की पोषण आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ सूक्ष्म जीवाणुओं के बढ़ने का वातावरण भी तैयार करते हैं। मृदा में वायु संचार व जल धारण क्षमता में वृद्धि के साथ यह मृदा की भौतिक व रसायनिक स्थिति को बनाये रखते हुए पर्यावरण को संरक्षित एवं सुरक्षित रखने में सहयोग प्रदान करता है। फसल अवशेषों में उपलब्ध पोषक तत्वों का स्तर सारिणी-1 में वर्णित है।

सारिणी-1

विभिन्न फसल अवशेषों में नत्रजन, फास्फोरस एवं पोटाश तत्वों की मात्रा

| फसल अवशेष | नत्रजन | फास्फोरस | पोटाश |
|--------------------------|--------|----------|-------|
| गेहूँ का भूसा | 0.53 | 0.10 | 1.10 |
| जौ का भूसा | 0.57 | 0.26 | 1.20 |
| गन्ने की पत्तियाँ/ | 0.35 | 0.10 | 0.60 |
| धान का पूआल | 0.36 | 0.08 | 0.70 |
| राई/सरसों का तना | 0.57 | 0.28 | 1.40 |
| मक्का की कर्वी | 0.47 | 0.57 | 1.65 |
| बाजरे की कर्वी | 0.65 | 0.75 | 2.50 |
| मूँगफली का छिलका | 0.70 | 0.48 | 1.40 |
| आलू | 0.52 | 0.09 | 0.85 |
| वृक्षों की सूखी पत्तियाँ | 1.50 | 0.45 | 2.50 |

उपरोक्त सारिणी से यह स्पष्ट है कि फसल अवशेषों में पोषक तत्व कि प्रचुर मात्रा विद्यमान है, जिनसे मृदा के आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति की जा सकती है व विदेशों में फसल के अवशेषों को बारीक टुकड़ों में काटकर मृदा में मिला दिया जाता है। देश में भी रोटावेटर जैसी मशीनों का प्रयोग शुरू हो गया है जिससे खेत को तैयार करते समय एक बार में ही फसल अवशेषों को बारीक टुकड़ों में काटकर मृदा में मिलाना आसान हो गया है। जिन क्षेत्रों में नमी की कमी हो, वहाँ पर फसल अवशेषों का कम्पोस्ट खाद तैयार कर खेत में डालना लाभप्रद होता है। आस्ट्रेलिया, रूस, जापान, व इंग्लैंड आदि विकसित देशों में इन अवशेषों को